डॉ. व्यं. वि. द्रविड
एम.ए. (संस्कृत-मराठी)
एम.ए. (हिंदी)
पीएच.डी.
स्नातकोत्तर हिंदी विभाग
शिवाजी विश्वविद्यालय
कोल्हापुर ।

प्रमाणपत्र

मैं यह प्रमाणित करता हूँ, कि प्रा.कु.शीला हनुमन्त बन्डी ने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम. फिल्. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु-शोध प्रबन्ध 'उपेन्द्रनाथ अश्क के 'अंजोदीदी' का समीक्षात्मक अध्ययन' मेरे निर्देशन में सफलता पूर्वक पूरे परिश्रम के साथ पूरा किया है। प्रा.कु.शीला हनुमन्त बन्डी के प्रस्तुत शोध कार्य के बारे में मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ।

(डा.व्यं. वि. द्रविड)
शोध निर्देशक

कोल्हापुर ।
दिनांक २९ : ११ : १९९१ ।

..

प्रख्यापन

यह लघु-प्रबन्ध मेरी अपनी मौलिक रचना है, जो एम. फिल. के लघु-प्रबन्ध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है । यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की किसी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गयी है ।

श्रीमती [signature]

कृतज्ञता-ज्ञापन

जिसप्रकार किसी भी प्राप्य को पाने के लिए अनेक लोगों की सहायता की जरूरत होती हैं, वैसे ही प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध को प्रथम अवस्था से अंतिम-परिपूर्ण अवस्था तक पहुँचाने में गुरुजन वर्ग, मित्र-परिवार, अभ्यासिका, ग्रंथपाल, माता-पिता आदि योगदान तो जरूरी हैं । परंतु सर्व प्रथम जिन्होंने मुझे शुरु से अंतक निर्व्याज भाव से सहयोग दिया हैं, वे हैं मेरे शोध निर्देशक आदरणीय डॉ. व्ही. व्ही. द्रविड, जो एक ख्यातिप्राप्त, चिंतनशील गुरु हैं, उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना, मेरा परमधर्म हैं, क्योंकि इनके मार्गदर्शन के बिना इस शोध प्रबन्ध का पूरा होना संभव नहीं था । इसके साथ मुझे वैयक्तिक मार्गदर्शन एवं प्रेरणा देनेवाले मेरे साहित्यिक गुरुवर श्रध्देय प्रभुदास कैणव (ओरिसा), नर्मदाप्रसाद त्रिपाठी (भोपाल), कॅ. प्रभाकर माचवेजी, रसिक बिहारी मंजुल, दिल्ली, डॉ. शिवतोषदास (केन्द्रीय हिंदी निदेशालय के शिबिर निदेशक) डॉ. भगवती प्रसाद निदारिया जी इनके साथ ही मेरे सहयोगि मित्र, सहेलियाँ एवं मेरे गुरुजन वर्ग का प्रमुख योगदान हैं । मेरे श्रध्देय आदरणीय माता-पिताजी के प्रोत्साहन एवं सहयोग हैं ही ।

प्राक्कथन । भूमिका

`अंजोदीदी` एक समस्या नाटक हैं । मुझे ऐसा लगा, कि यह नाटक हमारे आजकल के परिवार की समस्या को लेकर रचा गया हैं । मेरी नजर में `अंजोदीदी` का चरित्र जो अपनी विशिष्टता एवं गरिमा को लेकर अंततक छाया रहता हैं, बड़ा ही प्रभावशाली हैं । अपने ऊपर अपने नाना के विचारों को लादना, या यूँ कहिए, कि प्रत्यारोपन करना कोई आसान बात नहीं । अपने पूरे परिवार को इसका निर्देश करने के लिए अपनी पूरी जिंदगी में आमादा किया हैं और सबसे बडी आश्चर्य की बात यह हैं, कि अपनी मृत्यु के बाद भी `ओमी` उसकी बहू के रूप में अपना प्रतिरूप छोड़ जाती हैं यहीं तो हैं नाटककार के शिल्प का कमाल । बीस साल के अंतराल को स्पष्ट करना, यह एक नवीनतम अनुभव हैं । अंजोदीदी रूढविचारों से प्रवृत हैं, किंतु औरोंपर अति के रूप में उसके विचार लादे जानेपर सारा परिवार ही नहीं, स्वयं अंजोदीदी को भी बहुत दुःख झेलना पडता हैं, यहाँतक कि अंत में वह स्वयं आत्मघात कर लेती हैं । इस सारी घटनाशृंखला से एवं उपेंद्रनाथ अश्क के कुछ साहित्यिक अध्ययन में रुचि पैदा होने के बाद `अंजोदीदी` की चरित्रगत विशेषाता आज के युगीन संदर्भों में उसकी अहमियत दोनोंपर तौलनिक अध्ययन होने के बाद ही `अंजोदीदी` का और से प्रारंभ हो गया। और मुझे लगता हैं तत्वों की दृष्टि से कसौटीपर उतरने के बाद वह अपने पूरे उत्कर्षपर पहुँचता हैं ।

अनुक्रमणिका

		पृष्ठ संख्या
प्रथम अध्याय	- उपेंद्रनाथ अश्क व्यक्तित्व-कृतित्व	6-15
द्वितीय अध्याय	- उपेंद्रनाथ अश्क के समस्या नाटक	15-62
तृतीय अध्याय	- `अंजोदीदी` नाट्यशिल्प एवं मंचीयता	63-132
चतुर्थ अध्याय	- उपसंहार	133-142